तीसरा अध्याय

शमशेर की ग़ज़लें

३.१ प्रास्ताविक

३.२ ग़ज़ल शब्द का अर्थ एवं स्वरूप

३.३ हिन्दी में ग़ज़ल का सूत्रपात

३.३.१ अमीर ख़ुसरो

३.३.२ महात्मा कबीर

३.३.३ रघुनाथ बंदीजन

३.३.४ किशोरीलाल

३.३.५ मीरा

३.३.६ प्यारेलाल शोकी

३.३.७ भारतेन्दु

३.४ ग़ज़लकार शमशेर

३.५ शमशेर की ग़ज़लों में प्रेमभाव की अभिव्यक्ति

३.६ शमशेर की ग़ज़लों में वेदना की अभिव्यक्ति

३.७ शमशेर की ग़ज़लों में राजनीतिक बोध

३.८ निष्कर्ष ।

तीसरा अध्याय

शमशेर की ग़ज़लें

३.१ प्रास्ताविक --

हिन्दी ग़ज़ल के विकासक्रम में शमशेर बहादुर सिंह का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा है । उनकी ग़ज़लों में हमें विचारोंकी नवीनताके हिन्दी पाठकों को ग़ज़ल के सही रूप से परिचित कराया । शमशेर की ग़ज़लों में अनुभूति की प्रधानता रही है । उनकी ग़जलों को पढ़ते हुए हमें ऐसा महसूस होता है कि शमशेर की अनुभूति हम सबकी अनुभूति से भिन्न नहीं है ।

३.२ ग़ज़ल शब्द का अर्थ एवं स्वरूप --

ग़ज़ल का अर्थ क्या है ? यह सवाल हमारे सामने खड़ा होता है । इस मामले में विद्वानों में मत भिन्नता है । अलग अलग विद्वान ` गजल ` के अलग अलग अर्थ बताते हैं । ` दरअसल ` गजल ` का शाब्दिक अर्थ मुहब्बत के जज्बात व्यक्त करना है । अच्छी गजल वह है, जिसमें इश्क़ - मुहब्बत की बातें सच्चाई तथा असर के साथ जाहिर की जाती है । गजल की प्रभावात्मकता उसके भाव और प्रदर्शन की शैली में है । अनुकूल कण्ठ तथा गान शैली गजल की सरसता को बढ़ाती है । अर्थ की रंगीनी ग़ज़ल की मुख्य विशेषता है ।"[1]

" ग़ज़ल में माशूक और उसकी जवानी का ज़िक्र होता है । तभी तो 'ग़ज़ल' का अर्थ है -- जवानी का हाल बयान करना अथवा माशूक की संगति और इश्क का ज़िक्र करना ।" [२]

वास्तव में ग़ज़ल के कई अर्थ पाये जाते हैं । 'ग़ज़ल' अरबी से निकला हुआ शब्द है । यह अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है, 'स्त्री' से बातें करना ।' [3]

ग़ज़ल - दर्पण में कहा है --

मूलत: " ग़ज़ल शब्द स्त्रीलिंग है । प्रस्तुत शब्द मूलत: अरबी का ज्यों का त्यों फारसी भाषा से भारत आया । 'ग़ज़ल' का अर्थ है औरत या औरत के बारें में कहने का तरीका (औरत या औरतों के बारे में बातचीत का तरीका) ।" [४]

अंग्रेजी में उर्दू साहित्य का इतिहास लिखा गया है, उसमें मुहम्मद सादिक ने लिखा है --

" the word Ghazal means corrersation with, women, and the form was originally reserved for erotic themes only. But in the course of time the rules governing its subject matter came to be relaxed."[5]

नैना देवी का मानना है --

" ग़ज़ल का शाब्दिक अर्थ है प्रेमियों की बातचीत । एक ग़ज़ल का हर मिसरा अपने आप में संपूर्ण होता है । कलाकार की खूबी इसमें है कि बिना कविता के मूल रस को सताऊ, वह उसके भावपक्ष की, स्वरों द्वारा सूक्ष्मतम अदायगी करें ।' [६]

इससे यह बात बिल्कुल साफ होती है कि ग़ज़ल का अर्थ है - औरत से बातचीत या प्रेमियों की बातचीत ।

ग़ज़ल के कोशगत भी विभिन्न अर्थ है -- उर्दू हिन्दी शब्दकोश बताता है --

" प्रेमिका से वार्तालाप । उर्दू फारसी कविता का एक प्रकार विशेष, जिसमें प्राय: ५ से ११ शेर होते है । सारे शेर एक ही रदीफ और काफिये में होते है और हर शेर का मजमून अलग होता है, पहला शेर मतला कहलाता है ।" ७

मराठी शब्द रत्नाकर के अनुसार ग़ज़ल का अर्थ है --

" फारसी प्रेमकाव्य की एक विधा " ८

मराठी व्युत्पत्ति कोश ग़ज़ल का अर्थ बताता है --

" काव्य की एक विशिष्ट विधा, वृत्त, विशेष, प्रेम विषायक कविता, फारसी छन्द में लिखा गय यमक - प्रधान प्रेम गीत ।
A particular kind of metre and poetry in persiam."[9]

इस तरह से हमने देखा कि ग़ज़ल के कितने अर्थ है । यह बेशक कहा जा सकता है कि ग़ज़ल का अर्थ है - प्रेमिका से बातचीत तथा फारसी - उर्दू का प्रेमगीत । औरत से `गुफ्तगू` करना ही ग़ज़ल है । `ग़ज़ल` का औरत और प्रेम से घनिष्ठ संबंध रहा है । इसका मुहावरा ही गज़ल की बुनियाद है ।

ग़ज़ल का स्वरूप --

हिन्दी ग़ज़लें रचना विधान की कसौटी पर खरी उतरती हैं। हिन्दी ग़ज़लें फारसी - उर्दू की ग़ज़लों से भिन्न प्रकार की हैं। फारसी-उर्दू की ग़ज़लों में इश्क - मुहब्बत , का ही ज़िक्र मिलता है। पर हिन्दी ग़ज़लों में इश्क-मुहब्बत का कम मात्रा में चित्रण हुआ है।

'हिन्दी ग़ज़ल - उद्भव और विकास' में डॉ.रोहिताश्व अस्थाना ने कहा है --

" वस्तुत: हिन्दी ग़ज़ल समकालीन सामाजिक,आर्थिक, राजनैतिक चेतना एवं सांस्कृतिक अवमूल्यन के विक्षोभ को लेकर चली है।" [१०]

महेश 'अनघ' ने ग़ज़ल के बारेमें अपनी राय एक ग़ज़ल के माध्यम से ही प्रस्तुत की है, जो बडी महत्वपूर्ण है। देखिए उनकी यह गजल --

" खुशियों का घर छोड गये दिल की दीवानी हुई गजल
किसी तरन्नुम की बाहों में पानी पानी हुई ग़ज़ल"। [११]

डॉ.सरदार मुजावर जी ने अपनी हिन्दी ग़ज़ल के विविध आयाम में कहा है --

" आज की भ्रष्ट व्यवस्था,भ्रष्ट राजनीति,भ्रष्ट समाज-नीति,भ्रष्ट धर्मनीति,कालाबाजारी,बेरोजगारी,महँगाई,आम आदमी की समस्याएँ, उनकी वेदनाएँ, उसकी आशा-निराशा आदि तमाम विषायों को लेकर हिन्दी ग़ज़लें लिखी गयी हैं और लिखी जा रही हैं। फारसी - उर्दू की ग़ज़लों से हिन्दी ग़ज़लों का स्वरूप अलग तरह का रहा है।" [१२]

हिन्दी ग़ज़ल किसी महबूबा से बातचीत नहीं करती है । वह तो आम आदमी की जिंदगी से वह बातचीत कर रही है । आम आदमी की जिंदगी ही ग़ज़ल का केन्द्र बिन्दू है ।

हिन्दी की ग़ज़लें विसंगतियों पर तीखे प्रहार करती है । आम आदमी की कमजोरियों का जिक्र हिन्दी की ग़ज़लों में व्यापक रूप से व्यक्त हुआ है ।

हिन्दी ग़ज़लों मे विषायगत परिवर्तन आया है । इसका एक उदाहरण देखिए, जिससे ग़ज़ल का स्वरूप स्पष्ट होता है --

" भेडिये अब शहर में आने लगे है
आदमी को प्यार सिखलाने लगे है

मित्रता का ओढकर भारी लबादा
मित्रता को नोचकर खाने लगे है
गूँजती है चीख-सी मेरी रगों में
सामायिक अनुभव मुझे भाने लगे है
अब किसी जंगल में अपना घर बनाएँ
नागरिक अधिकार उलझाने लगे है

आग का दरिया दिलों तक दौडता है
टूटते रिश्ते गजब ढाने लगे है । "[13]

स्व - दुष्यंतकुमार की ग़ज़लो ने तो हिन्दी ग़ज़ल को नयी दिशा प्रदान की है । उनकी ग़ज़ल के कुछ शेर देखिए ---

" वो आदमी नहीं है मुकम्मल बयान है,
माथे पे उसके चोट का गहरा निशान है । "[14]

सार यही कि हिन्दी की ग़ज़लों में कहीं भी वासनात्मकता की अभिव्यक्ति नहीं हुई है । हिन्दी ग़ज़लें भारतीय परिवेश से जुड़ गयी हैं ।

३.३ हिन्दी में ग़ज़ल का सूत्रपात --

हमारे सामने यह सवाल है कि हिन्दी में ग़ज़ल का सूत्रपात कब हुआ ?

३.३.१ अमीर ख़ुसरो --

हिन्दी ग़ज़ल का प्रारंभ अमीर ख़ुसरो से माना जाता है । अमीर ख़ुसरो का जीवनकाल १२५३ ई.से १३२५ ई.तक माना जाता है । अमीर ख़ुसरो फ़ारसी - हिन्दी के प्रतिभासम्पन्न कवि थे । फ़ारसी के वे मशहुर शायर भी थे अमीर ख़ुसरो अपनी पहेलियों के कारण मशहुर हुए । वे संगीत के ज्ञाता थे । अमीर ख़ुसरो ने ही हिन्दी ग़ज़ल की नींव डाली है ।

अमीर ख़ुसरो की लिखी हुई पहली हिन्दी ग़ज़ल का एक उदाहरण प्रस्तुत है --

" जब यार देखा नैन भर, दिल की गई चिन्ता उतर
ऐसा नहीं कोई अजब राखे उसे समझाय कर ।
जब आँख से ओझाल भया, तडपन लगा मेरा जिया
हक्का इलाही क्या किया, आँसू चले भर लाय कर ।
तूँ तो हमारा यार है, तुझ पर हमारा प्यार है,
तुझ दोस्ती बिसियार है, एक शब मिलो तुम आय कर ।
जाना तलब तेरी करूँ, दीगर तलब किसकी करूँ ,
तेरी जो चिन्ता दिल करूँ, एक दिन मिलो तुम आय कर ।"[१५]

अमीर ख़ुसरो ने आगे के ग़ज़लकारों का मार्ग प्रशस्त किया ।

३.३.२ महात्मा कबीर --

अमीर ख़ुसरो के बाद कबीर का ही नाम सामने आता है । कुछ विद्वानों की यह राय है कि कबीर की ग़ज़ल हिन्दी की पहली ग़ज़ल है । महात्मा कबीर ने बोली भाषा में अपनी गज़लें प्रस्तुत की हैं । कबीर की एक हिन्दी ग़ज़ल देखिए --

" हम्म हैं इश्क मस्ताना, हम्म को होशियारी क्या,
रहें आजाद या जग से, हम्म दुनिया से यारी क्या । " [१६]

कबीर की यह ग़ज़ल कसौटी पर खरी उतरती है । रदीफ - क़ाफिया का उन्होंने खूब अच्छा प्रयोग किया है । कबीर की ग़ज़लों में लौकिक प्रेम से अलौकिक प्रेम के दर्शन होते हैं ।

३.३.३ रघुनाथ बंदीजन --

कबीर के बाद `रघुनाथ बंदीजन` का नाम लिया जाता है । `रघुनाथ बंदीजन` ने ग़जल शैली को अपनाया है । एक रचना प्रस्तुत है --

" आप दरियाव पास नदियों के जाना नहीं
दरियाव पास नहीं होयगी सो धावेगी
दरखत बेलि आसरे को कभी शरक्त ना
दररक्त ही के आसरे को कभी वारक्त ना " । [१७]

३.३.४ किशोरीलाल --

आगे चलकर `किशोरीलाल` जी ने भी ग़ज़लें लिखीं । देखिए उनकी ग़ज़ले के उदाहरण --

" अदासे देख लो दिलवर यह फसले बहारी है
लगे दिल किस तरह अब तो निहायत बेकरारी है
जरा सूरत दिखाने में तुमको शर्म आती है
मुहब्बत इसको कहते हैं यही क्या शर्तें यारी है ।"[१८]

३.३.५ मीरा --

मीरा के पदों में भी ग़ज़ल के छन्द का प्रयोग देखने को मिलता है । भक्तिकाल में ग़ज़ल का प्रयोग प्रभावी रूप से होता होगा । तभी तो मीरा पर यह प्रभाव दीखता है । मीरा का एक पद देखिए जिसमें ग़ज़ल के छन्द का प्रयोग हुआ है --

" हो कान्हा, हो कान्हा, किन गूँथी जुल्फाँ कारियाँ - कारियाँ
सुघर कला परवीन हाथ सों, जसुमतिजी ने सवारियाँ - सँवारियाँ
जो तुम आओ मोरी बखरियाँ, जरू राखें चंदन किवाडियाँ
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, जुल्फन पर वारियाँ - वारियाँ ।"[१९]

३.३.६ प्यारेलाल शेाकी --

इसके बाद प्यारेलाल शेाकी का नाम आता है । प्यारेलाल शेाकी जहाँगीर के समकालीन कवि माने जाते हैं । उनकी ग़ज़लोंमें हिन्दीपन पाया जाता है । शेाकी ग़ज़लों में अलौकिक प्रेम की झलक मिल जाती है । शेाकी की ग़ज़लों पर कबीर की भाषा का प्रभाव देखा जा सकता है ।

" जिन प्रेम रस चाखा नहीं अमृत पिया तो क्या हुआ
जिन इश्क में सर ना दिया सो जग जिया ता क्या हुआ ?
ताबीज औ तूमार में सारी उमर जाया किसी
रीमी मगर हीले घने मुल्ला हुआ तो क्या हुआ ?

भारत जगत का छोडकर दिल तन से तै खिलवत पकड़
शाकी पियारेलाल बिन सबसेमिला तो क्या हुआ ? "[२०]

३.३.७ भारतेन्दु की गज़ले --

हिन्दी में गज़लों का सूत्रपात भारतेन्दु युग से ही माना जाता है । उनकी हिन्दी गजल का एक शेर देखिए --

" हिला देंगे अभी ऐ संगदिल तेरे कलेजे को
हमारी आतिशबारी से पत्थर भी पिघलते हैं । " [२१]

उनकी गज़ल का एक और शेर देखिए --

" उनको शाहव्याही हर बार मुबारक होवे
कैसर हिन्द का दरबार मुबारक होवे । " [२२]

भारतेन्दु एक बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न कवि थे । भाषाओं को जानते थे और उनमें रचनाएँ प्रस्तुत करते थे । भारतेन्दु गुजराती, बंगला, उर्दू आदि भाषाओं में अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कर चुके हैं । सच तो यह है कि भारतेन्दु उर्दू के पक्षधर थे । भारतेन्दु ने भी खूब गज़ले लिखी हैं । वे `रसा` उपनाम से लिखते थे । एक गज़ल प्रस्तुत है ---

" दिल मेरा ले गया दगा करके
बेवफा हो गया वफा करके
हिज्र की शब घटा ही दी हमने
दास्तां जुल्फ की बढ़ा करके
वक्ते रेहलत जो आयेवालीं पर
दोस्तो कौन मेरी तुरबत पर
रो रहा है रसा रसा करके" [२३]

भारतेन्दु के बाद अयोध्यासिंह उपाध्याय, मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद और निराला ने भी ग़ज़लें लिखीं। फिर प्रेरणा पाकर शमशेर से होकर दुष्यंतकुमार ने हिन्दी में ग़ज़लें प्रस्तुत की। `सायें में धूप` दुष्यंत कुमार का बेहद चर्चित और महत्वपूर्ण ग़ज़ल संग्रह है। `सायें में धूप` के जरिए दुष्यंतकुमार ने हिन्दी ग़ज़ल के क्षेत्र में अपना विशेष स्थान बना लिया है। आजकल भी बडे पैमाने पर ग़ज़लें लिखी जा रही हैं।

३.४ ग़ज़लकार शमशेर --

शमशेर बहादुर सिंह एक सफल ग़ज़लकार के रूप में हमारे सामने आते हैं। उनकी ग़ज़लों में हमें विचारों की नवीनता के दर्शन होते हैं। यह सच है कि `शमशेर पहले कवि हैं, जिन्होंने हिन्दी पाठकों को -

> ग़ज़ल के सही रूप से परिचित कराया। उनकी अधिकतर ग़ज़लों में नाज़ुक खयाली, मर्म को छूने की क्षमता, भाषा की लोच और बहरों का निर्वाह दृष्टिगत होता है। ग़ज़ल में खूबसूरियात लाने के लिए वह ग़ज़ल की परंपरा पर निर्भर करते हैं। उनकी ग़ज़लों पर कई शायरों का असर देखा जा सकता है। खास तौर पर मीर, गालिब, इकबाल और फानी। यह असर कई रूपों में कई प्रकार की अनुगूँज में मिलता है।` [२४]

शमशेर की ग़ज़लों में अनुभूति की प्रधानता रही है। शमशेर की ग़ज़लों में इन्सानी रिश्तों का बहुत सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक यथार्थवादी चित्रण हुआ है। इन रिश्तों में मीर और ग़ालिब के आगे सामाजिक परिवेश का चित्रण हुआ है। उनकी ग़ज़ल के कुछ शेर प्रस्तुत हैं --

" मैं यहाँ तक भूल गया जा सकूँ ।
एक आँसू में गिराया जा सकूँ ।।
तुम न ऐसी खाब-सी बातें करो ।
मैं भला तुमको निभाया जा सकूँ ।" [२५]

शमशेर एक मनोवैज्ञानिक यथार्थवादी कवि हैं । उनकी प्रतिभा भी अत्यंत मौलिक रही है । उन्होंने गज़लों के माध्यम से अपनी संवेदनाओं को अभिव्यक्ति दी है ।

" असल में शमशेर की आत्मा एक रोमांटिक, क्लासिकल प्रकार की है । किंतु इंप्रेशनिस्टिक होने के कारण उनका जोर संवेदन विशिष्टता और संवेदनाघात और केवल इसी पर होने से वे नयी कविता के एक अद्वितीय कवि के रूप में हमारे सामने आते हैं । महत्व की बात यह है कि यह इंप्रेशनिज्म केवल कुछ ही विषयों प्रणयजीवन संबंधी बातों के संबंध में अधिक तीव्रता से सक्रिय रहता है ।" [२६]

शमशेर की गज़लों पर उर्दू की गज़लों का खूब प्रभाव रहा है । कुछ शेर प्रस्तुत हैं --

" वफ़ा खता थी, खता मैंने जिंदगी भर की ।
अब इसके आगे जो मर्जी हो बन्दापरवर की ।।

" कोई तो साथ-साथ मेरी बेखुदी में था ।
मैं कैसे अपने होश में आया, जवाब दो ।।" [२७]

शमशेर की ग़ज़लों के कारण पाठक वर्ग में गजलों के प्रति दिलचस्पी पैदा हुई । शमशेर की ग़ज़लों में ग़ज़लियत के दर्शन होते हैं । आजकल हिन्दी का पाठक वर्ग हिन्दी ग़ज़लों की ओर आकर्षित हो रहा है । इसका श्रेय शमशेर को ही जाता है । खुद दुष्यंतकुमार ने भी उनके प्रभाव को स्वीकार किया है । शमशेर ने अपने आपको असाधारण कवि नहीं माना है । अपनी ग़ज़लों के बारे में उन्होंने कहा है --

" पर हाँ, मैं अपनी ग़ज़लों को जिनमें से कुछ को
मैंने प्रस्तुत संग्रह में स्थान दिया है, अपनी हिन्दी
रचनाओं से कभी अलग नहीं रखना चाहूँगा । ग़ज़ल
एक लिरिक विधा है, जिसकी अपनी कुछ शर्तें हैं,
अपना प्रतीक वाद है, अपनी जीवंत परंपरा है ।
ग़ज़लें मैंने थोड़ी ही और केवल अपने गाने गुन-गुनाने
के लिए ही लिखी । और उनमें से किसी मौलिकता
का दावा मुझे नहीं । ... पर मुझे असाधारण
कवि होने का ही दावा कब है ? अगर साधारणतया
मेरी कुछ चीजों से जिनमें दो-चार ग़ज़लें भी हैं,
थोडा-सा भी साहित्यिक मनोरंजन हो जाता है,
तो क्या यह पर्याप्त नहीं । " [२८]

देखिए उनके दो शेर --

" रही उम्र का एक पल कोई लाए ।
तड़पती हुई-सी ग़ज़ल कोई लाए ।।

हकीकत को लाए तख्युए से बाहर ।
मेरी मुश्किलों का जो हल कोई लाए ।। " [२९]

शमशेर बहादुर सिंह की ग़ज़लों में प्रेमभाव के दर्शन होते हैं । उनकी ग़ज़ल के दो शेर प्रस्तुत हैं --

" तुम एक ख़ाब थे जिसमें ख़ुद खो गये हम
तुम्हें याद आएँ तो क्या याद आऊँ ।।
के ख़ामोशियाँ जिनमें तुम हो न हम हैं
मगर हैं हमारी तुम्हारी सदाएँ । " ३०

३.५ शमशेर की ग़ज़लों में प्रेमभाव की अभिव्यक्ति --

शमशेर बहादुर सिंह की अधिकतर ग़ज़लें प्रेमभाव को प्रस्तुत करती हैं । शमशेर ने अपनी एक ग़ज़ल में प्रियतमा की अदाओं का बड़ी ही मनभावन वर्णन किया है । उनकी ग़ज़ल के कुछ शेर देखिए ---

" ये शोख़ चाल तेरी काफ़िराना मस्ताना,
किसी का ख़ाबो ख़याले-शबाना मस्ताना ।
जो ख़ुद ही बहका हुआ हो,तो उसे पे क्यों डाले
भला कोई निगहे आशिकाना मस्ताना ।
सुना चुका है मेरे कुंजे आफ़ियात में दिल
कलामे शोख़ अजब वालेहाना मस्ताना ।। " ३१

शमशेर के ये कुछ और शेर जो प्रेमभाव को व्यक्त करते हैं --

" फिर निगाहों ने तेरी दिल में कहीं चुटकी ली
फिर मेरे दर्द ने पैमान वफ़ा का बाँधा ।
और तो कुछ न किया इश्क में पड़कर दिल ने
एक इन्सान से इन्सान वफ़ा का बाँधा । " ३२

एक और ग़ज़ल में शमशेर ने मुहब्बत भरी नज़र की बात कही है। आखिरी दिनों में मुहब्बत भरी नज़र देखकर कवि को शिकवा याद आया --

" देखकर आखिर वक्त उनकी मुहब्बत की नज़र
हमको याद आया वो कुछ कहना जिसे शिकवा कहें।
उसकी पुरहसरत निगाहें देख कर रहम आ गया,
वर्ना जी में था कि हम भी भी हँस के दीवाना कहें।" ३३

शमशेर का एक शेर देखिए जिसमें उन्होंने कहा है कि वफ़ा खता होती है, पर खता तो करनी ही पड़ती है ---

" वफ़ा खता थी, खता मैंने ज़िंदगी भर की
अब इसके आगे जो मर्जी हो बंदापरवर की।" ३४

शमशेर की प्रेमभाव से जुड़ी एक ग़ज़ल प्रस्तुत है --

" आये भी वो गये भी वो गति है, यह जिला नहीं
हमने ये, कब कहा भला, हम से कोई मिला नहीं
आपके एक ख्याल में मिलते रहे हम आपसे
यह भी है एक सिलसिला गो कोई सिलसिला नहीं
गर्मे सफ़र है आप, तो हम भी हैं भीड़ में कहीं
अपना भी काफ़िला है कुछ आप ही का काफ़िला नहीं
दर्द को पूछते थे वो, मेरी हँसी थमी नहीं
दिल को टटोलते थे वो, मेरा जिगर हिला नहीं
आयी बहार हुस्न का ख्वाबे गदाँ लिए हुए
मेरे चमन को क्या हुआ, जो कोई गुल खिला नहीं

इश्क की शायरी है खाक, हुस्न का जिक्र है मजाक
दर्द में गर चमक नहीं, सहमें गर जिला नहीं

कौन उठाउ उसके नाज दिल तो उन्हीं के पास है
`शेक्स` मजे में है कि हम इश्क में मुब्तिला नहीं ।" [35]

शमशेर बहादुर सिंह की एक और गज़ल देखिए जो प्रेम भावना को व्यक्त करती है --

" उलट गए सारे पैमाने, कासागरी क्यों बाकी है
देस के देस उजाड़ हुए, दिल की नगरी क्यों बाकी है

कौन है अपना कौन पराया, छोड़ो भी इन बातों को
इक हम तुम है खेर से अपनी पर्दादरी क्यों बाकी है

शायद भूले-भटके किसी के रात हमारी याद आयी
सपने में जब आन मिले फिर बेखबरी क्यों बाकी है ।

किसकी साँस है मेरे अंदर, इतने पास और इतनी दूर
इस नजदीकी में दूरी की हमसफरी क्यों बाकी है

किसकी साँस है मेरे अंदर, इतने पास और इतनी दूर
इस नजदीकी में दूरी की हमसफरी क्यों बाकी है ।` [36]

३.६ शमशेर की गज़लों में वेदना की अभिव्यक्ति --

शमशेर ने अपनी गज़लों के माध्यमसे अपनी वेदना को व्यक्त किया है । वेदना को व्यक्त करने वाली गज़ल के ये कुछ शेर देखिए ---

"अपने दिल का हाल, यारों हम किससे क्या कहें
कोई भी ऐसा नहीं मिलता, जिसे अपना कहें।
हो चुकी जब खत्म अपनी ज़िंदगी की दास्तां
उनकी फरमाइश हुई है, इसको दो बारा कहें।" [37]

शमशेर ने अपनी ग़ज़लों में अपनी छटपटाहट को व्यक्त किया है।

"वो दुश्मन मेरा इतना अच्छा है क्यों
जो अपना नहीं है वो अपना है क्यों।
मुझे बादशाहत नहीं चाहिए
मगर तू ही कुल मेरी दुनिया है क्यों।

तुम्हें याद करता हूँ एकांत में
जुनूँ मेरा पहले से अच्छा है क्यों।

तुम्हें मुझसे मिलना गवारा नही
मुझे और जीना गवारा है क्यों।

मेरे दिल में रातों में यह तुम बगैर
बगुला-सा रह-रह के उठता है क्यों।

किसी और के हो दिलो जान से
मेरे साथ फिर ये तमाशा है क्यों।

किसी को यहाँ जानता कौन है
किसी के लिए जी भटकता है क्यों।

ज़ुबाँ दर्द की सिन्फे नाज़ुक से है
वो 'शमशेर' का शेर सुनता है क्यों।" [38]

इसी प्रकार शमशेर के ग़ज़लों में वेदना एवं निराशा का चित्रण देखने मिलता है ।

३.७ शमशेर की ग़ज़लों में राजनीतिक बोध --

शमशेर ने राजनीतिक बोध को लेकर अपने विचार अपनी ग़ज़लों के माध्यमसे व्यक्त किए हैं । विदेशी राजनीतिके बारें में भी उन्होंने अपनी बात कही ।

एक होकर सारे अखबारों का हल्ला देखिए ।
साथ अमरीका के गोया ये भी दस्ता देखिए ।

साफ हक की बात रखी उसने सबके सामने ।
ये कुसूर ईरान का कितना बडा था देखिए ।

एकदम तख्ता हुकूमत का पलट देते हैं ये,
काम करते हैं सिफारतखाने क्या क्या । देखिए
सरहदी गांधी,पठानों का वो खान अब्दुलगफ्फार -
सुनिए तो क्या कहता है इश्क मर्द-ए-दाना देखिए ।

सोविएत फौजी मदद काबुल ने जब मांगी तो आई
था मुनासिब ही कदम ये हस्ब-ए-वादा देखिए ।

हद्दे पाकिस्तान में सी.आई .ए.की साजिशें
सरहदी फौजों को हमलावर बनाना देखिए ।

ऐटमी बेडे,हवाईयान हजारों ही जमा
क्या है अमरीका की ताकत की ठिकाना देखिए ।

परचमे इस्लामें के हैं साथ अमरीकी निशान
हो गया कुर्बान डॉलर पर जमाना देखिए ।

अहद ओ पैमाँ अम्न की खातिर है या है बहर-ए-जंग
असलियत में क्या है अमरीका का चेहरा देखिए ।" [३९]

शमशेर बहादुर सिंह ने राजनीति पर व्यंग्यात्मक ग़ज़लें प्रस्तुत की हैं । नेता नेता नहीं रह पाए हैं । नेता तो रावण ही बन गये हैं.दंगे भड़काने का काम नेता लोग ही करते हैं --

" राह तो एक थी हम दोनों की,आप किधर से आ गए
हम जो लूट गए पीट गए,आप जो राजभवन में पाए गए
किस लीलायुग में आ पहुँचे,अपनी सदी के अंत में हम
नेता,जैसे घास-फूँस के,रावन खडे कराए गए
जितना ही लाउडस्पीकर चीखा,उतना ही ईश्वर दूर हुआ
उतने ही दंगे फैले,जितने दीन-धरम फैलाए गए
मूर्ति-चोर मंदिर में बैठा,औ गाइक अमरीका में
दान-दक्षिना लाखों डॉलर,मुक्त दान करवाए गए "[४०]

३.८ निष्कर्ष --

निष्कर्ष के रूप में कह सकते हैं कि शमशेर बहादुर सिंह एक सफल ग़ज़लकार के रूप में हमारे सामने आते हैं । मूलत: ग़ज़ल शब्द का अर्थ है औरत या औरतों से प्यार भरी बातचीत । दूसरे शब्दों में महबूबा से इश्क की बातें करने का नाम ही ग़ज़ल है । लेकिन वक्त के साथ - साथ ग़ज़ल शब्द के अर्थ में भारी बदलाव भी आ गए । आजकल ग़ज़लों में सामाजिकता एवं राजनीति का चित्रण देखने को मिलता है । वास्तव में ग़ज़ल कम से कम शब्दों में कोई बहुत बड़ी बात कह देती है । बेशक हिन्दी के सबसे पहले ग़ज़लकार हैं अमीर खुसरो । खुसरो के

बाद नाम लिया जाता है कबीर का । प्यारेलाल शोकी ने कबीर की परंपरा को आगे बढ़ाया है । मीराँ ने भी ग़ज़ल शैली को अपनाया है । मीराँ के बाद भारतेंदु युग की शुरुआत होती है । वास्तव में ग़ज़लकार के रूप में शमशेर का नाम बड़ी इज़्ज़त के साथ लिया जाता है । ग़ज़ल की तमाम ख़ूबियाँ उनमें देखी जा सकती है ।

संदर्भ

१ संगीत ग़ज़ल अंक - सं. बालकृष्ण गर्ग, पृ.९

२ कविता कौमुदी - श्री रामनरेश त्रिपाठी, पृ.३७

३ उर्दू साहित्य का इतिहास - सय्यद एहतिशाम हुसैन, पृ.३५४

४ गजल - दर्पण - डॉ. विजय वाईकर, पृ.१

५ अ. हिस्ट्री ऑफ उर्दू लिटरेचर - सादिक मुहम्मद , पृ.१९

६ धर्मयुग - ३० मार्च ,१९८६

७ उर्दू हिन्दी शब्दकोश - से.मुस्तफा खाँ `मदाह`, पृ.१७७

८ मराठी शब्द रत्नाकर - कै.वासुदेव गोविंद आपटे, पृ.१४२

९ मराठी व्युत्पत्ति कोश - कृ.पां.कुलकर्णी, पृ.२३८

१० हिन्दी गजल - उद्भव और विकास - डॉ.रोहिताश्व अस्थाना,पृ.१३९

११ श्रेष्ठ हिन्दी ग़ज़लें - सं.मनोज तोमर,पृ.१४

१२ हिन्दी ग़ज़ल के विविध आयाम - डॉ.सरदार मुजावर,पृ.५१

१३ सन्नाटे में गूँज - डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल, पृ.३७

१४ साये में धूप - दुष्यंतकुमार,पृ.५९

१५ अमीर खुसरो और उनका हिन्दी साहित्य - भोलानाथ तिवारी,पृ.१३३

१६ ग़ज़ल - एक यात्रा : सूर्यप्रकाश शर्मा, पृ.३४

१७ - वही - पृ.३४-३५

१८ - वही - पृ.३५

१९ शामियाने काँच के - डॉ.कुँअर बेचैन,पृ.२०

२० ग़ज़लिका - रुद्र काशिकेय - पृ.२१

२१ आजकल - मई,१९८१

२२ भारतेन्दु ग्रंथावली - खण्ड ३ - सं.ब्रजरत्नदास,पृ.१४७

२३ गजल एक यात्रा - सूर्यप्रकाश शर्मा,पृ.३६-३७

२४ शमशेर की कविता - डॉ.नरेन्द्र वसिष्ठ,पृ.५९

२५ - वही - पृ.६१

२६ शमशेर - सं.सर्वेश्वर दयाल सक्सेना और मलयज,पृ.१९

२७ शमशेर की कविता - डॉ.नरेन्द्र वसिष्ठ,पृ.६२

२८ कुछ और कविताएँ - शमशेर, पृ.७

२९ कुछ और कविताएँ, पृ.१७

३० - वही - पृ.६७

३१ उदिता : अभिव्यक्ति का संघर्ष - शमशेर,पृ.९३

३२ कुछ और कविताएँ - शमशेर,पृ.९२

३३ उदिता : अभिव्यक्ति का संघर्ष - शमशेर,पृ.९७

३४ कुछ और कविताएँ - शमशेर,पृ.९२

३५ ग़ज़ल एक यात्रा : सूर्यप्रकाश शर्मा,पृ.५४

३६ काल तुझसे होड है मेरी - शमशेर,पृ.१९

३७ कविता - अभिव्यक्ति का संघर्ष - शमशेर, पृ.९७

३८ काल तुझसे होड है मेरी - शमशेर,पृ.९७

३९ - वही - पृ.२७-२८

४० - वही - पृ.४१